शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

राजनांदगांव (छ.ग.)

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन

सत्र - 2010-11

विद्या सर्वस्य भूषणम्

प्रभारी
डॉ. शंकर मुनि राय
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

प्राचार्य
डॉ आर.एन.सिंह

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

संस्कृत विभाग

सीपीई द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय विभागीय शैक्षणिक भ्रमण

भ्रमण एवं अध्ययन दिनांक– 16–19 मार्च 2011
कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन
सांदीपनि आश्रम
भर्तृहरि गुफा
ज्योतिष वेधशाला
तथा
श्री महाकालेश्वर वैदिक प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान, उज्जैन

दल प्रभारी– डॉ. आर. एस. साहू एवं सीता तिवारी, सहायक– श्री कुलेश्वर साहू
कुल विद्यार्थी संख्या– 26

संयोजक एवं विभागीय प्रभारी
डॉ. शंकर मुनि राय

1.

16 मार्च–2011, रेलवे स्टेशन उज्जैन

महाकाल की नगरी उज्जैन स्थित कालिदास संस्कृत अकादमी के बारे में विद्यार्थियों के साथ भ्रमण की योजना बहुत दिनों से बनती आ रही थी। कई बार प्रयास के बाद भी जब ऐसा संयोग नहीं बन पाया तब संस्कृत विभाग के विद्यार्थी अपने भाग्य को कोसते हुए संतोषः परमम् सुखम का सूत्र आलापने लगे थे। पर वे निराश नहीं थे। क्योंकि उन्हे विश्वास था कि समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ भी नहीं मिलता है।

कालिदास अकादमी की गतिविधियों तथा वहां के आयोजन से कभी प्रत्यक्षतः मेरा भी तालुकात नहीं रहा था। अतः इस सत्र में सीपीई योजना के अंतर्गत जब मैंने वहां की यात्रा का प्रस्ताव प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंहजी के समक्ष रख तो वे भी सहर्ष सहमत हो गये तथा तथाशीघ्र इसे पूरा कर लेने की सलाह भी देने लगे।

पूर्व निर्धारित कार्यकम के अनुसार 15 मार्च 2011 को विभाग के कुल 26 छात्र–छात्राओं का दल राजनांदगांव स्टेशन पहुंच गया। सबकी गिनती पहचान पत्र के साथ हुई और ट्रेन से रवानगी हो गई। कुछ ऐसे विद्यार्थी जो पहली बार ट्रेन की यात्रा कर रहे थे, को अनुभवी विद्यार्थियों के साथ बर्थ आबंटित की गई। रात में भोजन के बाद सोने को लेकर समस्या आई कि कुछ छात्राएं अकेले सोने से घबरा रही थीं। मतलब यह कि एक ही सीट पर दो–दो सोने लगीं। इस कारण हमारा बहुत सारा बर्थ खाली जाने लगा, जबकि बहुत सारे यात्री खड़े यात्रा कर रहे थे।

ऐसे में संभव था कि कोई भी अनजान यात्री कहीं भी बैठ सकता था, जिसे रोक पाना उचित नहीं था। पर हमारी समस्या इससे अलग यह भी थी कि कोई भी यात्री कहीं भी छात्राओं का सामान लेकर उतर भी सकता था। ऐसे में यात्रा प्रभारी डॉ. आर एस साहू ने यात्रियों को अपने विश्वास में लेकर उन्हें न सिर्फ अपनी बर्थ पर बैठाया, बल्कि रात भर स्वयं जग कर ही यात्रा करने को विवश हुए।

हमारे विद्यार्थियों में अधिकांश अकादमी से अधिक महाकाल दर्शन के लिए उत्सुक थे। विशेषकर कुछ छात्राएं तो उसी मकसद से गई थीं। उज्जैन रेलवे स्टेशन से हमने पहले ठहरने के लिए स्थान की तलाश की तो पता चला कि महाकाल मंदिर के पास ही उसका धर्मशाला है, जो हमारे लिए बहुत अच्छा रहेगा। हमने वैसा ही किया। फिर वहां से

दूरभाष पर अकादमी के उप निदेशक डॉ जगदीश शर्मा से बात कर अपने पहुंचने की सूचना दी तो बताये कि अभी वहां भर्तृहरि पर सेमिनार चल रहा है। हमारा प्रयास था कि उस सेमिनार में शामिल होते पर संभव नही हो सका। पर जब हम अकादमी पहुंचे तब मुख्य द्वार पर ही कालिदास की मूर्ति देखकर हमारे विद्यार्थी प्रसन्न होकर उन्हे प्रणाम करने लगे। चारों तरफ हरियाली, लता–कुंज और तरह–तरह के वृक्ष आदि हमे इस बात का एहसास करा रहे थे कि हम कालिदास अकादमी के परिसर में ही पहुंच चुके है। सर्वत्र आश्रमीय व्यवस्था इस प्रकार कि बन्दरों का झुण्ड तो कहीं चिड़ियों की चहक से हमारी थकान स्वतः मिटने लगी थी।

जैसे ही सेमिनार हॉल में डॉ. शर्मा को बता चला कि हम अपने दल के साथ पहुंच चुके हैं, वे उधर से निकल पड़े और हम पर नजर पड़ते ही दोनो हाथ जोड़कर स्वागतम् कह हमारा स्वागत किये। हम सभी ने उन्हे अपने हाथ जोड़े और यथा योग्य अपनी उम्र के अनुसार झुक कर चरण स्पर्श करने के प्रयास भी किये। फिर उन्होंने बगल के वाटर कूलर की ओर इशारा कर हमें पानी पीने का आग्रह किया तथा आवश्यकता अनुसार शौचालय की ओर भी उन्होंने इशारा किया। अपने कार्यालय में हम सबको एक साथ बैठाकर आपने पहले अपना परिचय दिया फिर हम सबका परिचय जाना।

हमें बताया गया

डॉ. जगदीश शर्मा ने हमें अपने कार्यालयीन बैठक में ही संबोधित करते हुए बताया कि कालिदास संस्कृत अकादमी की स्थापना 1978 में की गई थी और वर्ष 1982 से अकादमी ने अपने निजी भवन मे कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। कालिदास समूची सास्कृतिक परंपरा और भारतीय चेतना के प्रतीक के रुप में जाने जाते हैं। जो लोग उन्हे सिर्फ मांसल कवि के रुप में उघृत करते हैं वे उन्हे गहराई से नहीं जानते। अकादमी का उद्देश्य केवल महाकवि की अक्षय कीर्ति को सांस्थानिक रुप देने तक ही सीमित नही है। बल्कि ऐसी आंतरानुशासनिक संस्था की स्थापना करना है जो हमारी समूची संस्कृति तथा समस्त शास्त्रीय परंपराओं को उसकी समग्रता एवं विविधवर्णिता में अंकित कर सके। यह अकादमी क्लासिकी साहित्य, क्लासिकी रंगमंच एवं विभिन्न कला परंपराओं की गहन अध्ययन, शोध, अनुशीलन, प्रकाशन एवं प्रयोग के सक्रिय केन्द्र के रुप में कार्यरत है। हमारी सांस्कृतिक पहचान के

अन्वेषण तथा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए जो सार्थक प्रयास देश में हो रहे हैं, उसे जीवंत करने में यह अकादमी अग्रणी है।

हमने अकादमी के ग्रंथालय में पढ़ा

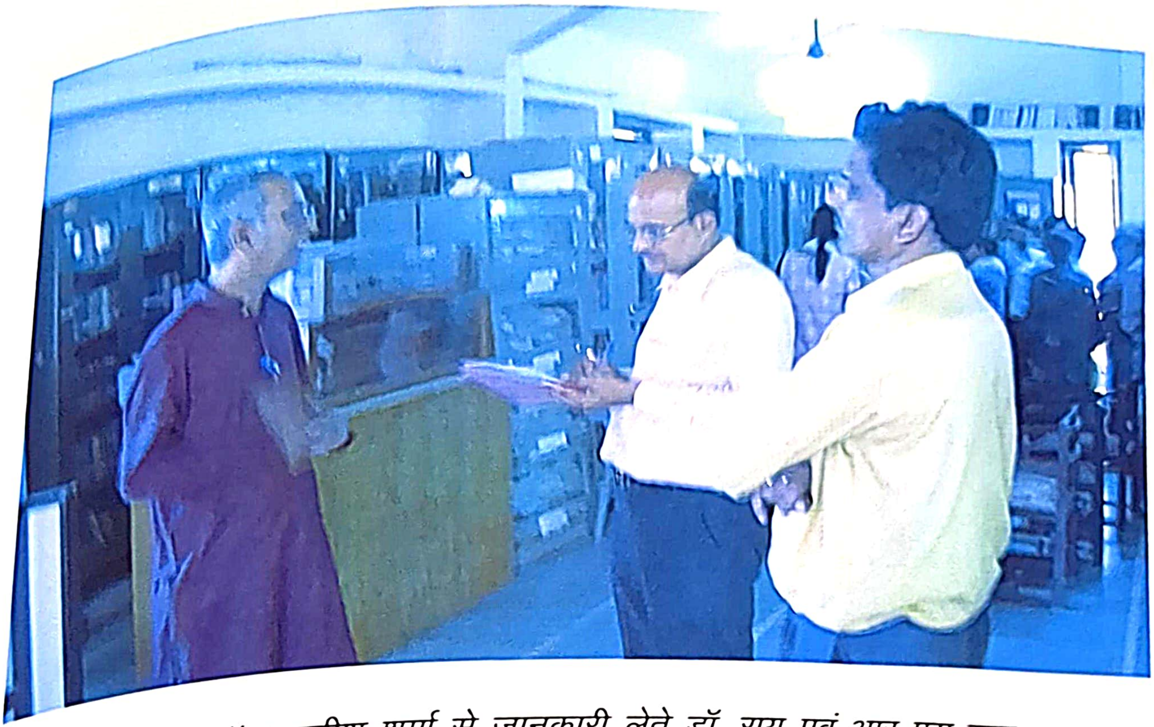

उपनिदेशक डॉ. जगदीश शर्मा से जानकारी लेते डॉ. राय एवं आर एस साहू

अकादमी के उद्देश्य

अकादमी के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य है–

1. कालिदास साहित्य का विश्लेषणात्मक एवं आंतरानुशासनिक कोणों से शोध एवं अनुशीलन तथा विभिन्न कला माध्यमों पर उसके समग्र प्रभाव का आकलन।
2. कालिदास साहित्य पर रचित संस्कृत के प्रकाशित/ अप्रकाशित टीकाओं का संकलन, संपादन एवं प्रकाशन।
3. कालिदास तथा संस्कृत की अन्य प्राचीन एवं महत्वपूर्ण कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद तथा प्रकाशन।
4. शोधच्छात्रों के अनुरुप विशाल ग्रंथालय का विकास।
5. कालिदास साहित्य के मूल ग्रंथ, टीका तथा समीक्षा एवं विश्व की अन्य भाषाओं में उपलब्ध अनुवादों का संकलन ।
6. शास्त्रीय पारंपरिक एवं वंशानुगत मौखिक परंपराओं का संकलन, संवर्धन, संपोषण, प्रयोग–डाक्यूमेटेशन।
7. प्राचीन शास्त्रों की गुरु–शिष्य–परंपरा के अनुसार अध्ययन व मनन हेतु आचार्यकुल का विकास।
8. संस्कृत नाटकों के विकास हेतु नाट्य समारोहों का आयोजन।
9. संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार के माध्यम से सांस्कृति जागरण हेतु प्रयास।
10. संस्कृत की विश्रुत विभूति वाल्मीकि, आद्यशंकराचार्य, भवभूति, बाणभट्ट, राजशेखर,

पतंजलि, विक्रमादित्य तथा भोज की स्मृति में कार्यक्रमों का आयोजन।

कालिदास संस्कृत अकादमी ने संस्कृत के भारतीय चिंतन परंपरा के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन किया है। जैसे 19वी सदी के अंत में पं. काशीनाथ शास्त्री अड़सुले द्वारा रचित व पं. बाबूलाल शुक्ल द्वारा संपादित ऋतुसंहारम् की 'हरसिद्धि' टीका का प्रकाशन। कालिदास की कृतियों के बालसंस्करणों का हिन्दी में प्रकाशन। आचार्यकुल के अधिष्ठाता आचार्य बच्चूलाल अवस्थी के 'ज्ञान' के तीन लघु ग्रंथों का प्रणयन किया गया है, जिनका 'वादत्रयी' शीर्षक से प्रकाशन किया गया है। पाणिनीयशिक्षा पर आचार्य अवस्थी द्वारा किये गये 'त्रिनयन' संस्कृत भाष्य तथा उसके डॉ. बालकृष्ण शर्मा द्वारा किये गये हिन्दी अनुवाद को 'पाणिनीयशिक्षा' शीर्षक ग्रंथ के रुप में प्रकाशन हुआ है। आचार्य बच्चूलाल अवस्थी द्वारा पुष्पदंतकृत 'शिवमहिम्नस्तोत्रम्' ही हरिसिद्धि संस्कृत व्याख्या का प्रकाशन कर अकादमी गौरवान्वित है। कालिदास के व्यक्तित्व व कृतित्व पर रोचक जानकारी देनेवाली पुस्तिका जिसे डॉ. भगवतीलाल पुरोहित ने लिखा है, का प्रकाशन किया जा चुका है।

टीकमचंद भावसार द्वारा संपादित मालवी लोकगीत तथा कालिदास कृत मेघदूत का मालवी अनुवाद 'हलकारो बादल' शीर्षक से प्रकाशित किया जा चुका है। डॉ भगवतीलाल द्वारा अनुदित यह कृति कालिदास को जन सामान्य तक पहूंचाने का विनम्र प्रयास है। डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा हिन्दी सॉनेट छंद में तथा पं. गुणसागर सत्यर्थी द्वारा बुंदेली में मेघदूतम् के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। अकादमी के उपनिदेशक डॉ. जगदीश शर्मा द्वारा मेघदूत, ऋतुसंहार तथा कुमारसंभव का सरल भाषा में हिन्दी अनुवाद सबके लिए पठनीय है। डॉ. शर्मा द्वारा संकलित कालिदास की सूक्तियों का संग्रह 'कालिदास ने कहा था' शीर्षक से प्रकाशित है। इस पुस्तक में वर्गीकृत सूक्तियां हिन्दी अनुवाद एवं संदर्भ संकेत सहित रोचक ढंग से प्रस्तुत हैं। विगत सौ वर्षो में कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर तेलगू भाषा में रचित ग्रंथों का लेखक, प्रकाशन वर्ष आदि सहित क्रमवार विवरण हिन्दी में 'कालिदास संदर्भ कोष', तथा अंग्रेजी में 'कालिदास बिब्लियोग्राफी' शीर्षक से प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रकाशन डॉ. जगदीश शर्मा ने किया है।

हमने प्रत्यक्षतः देखा

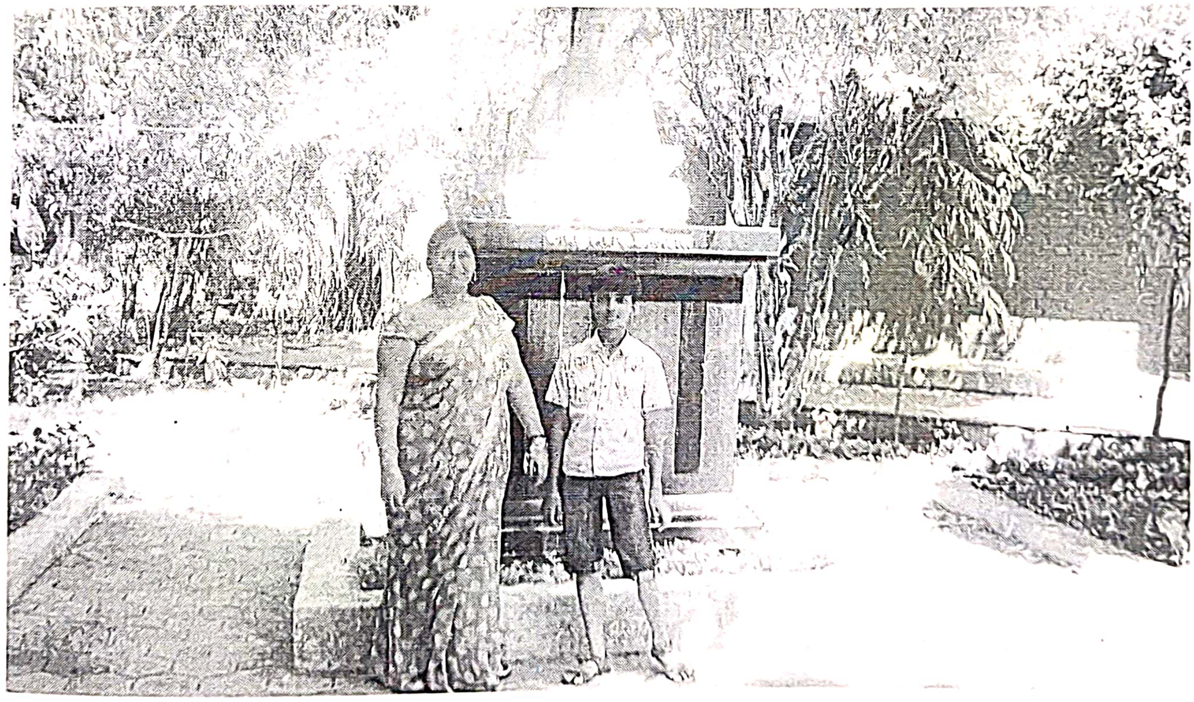

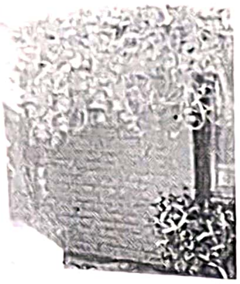

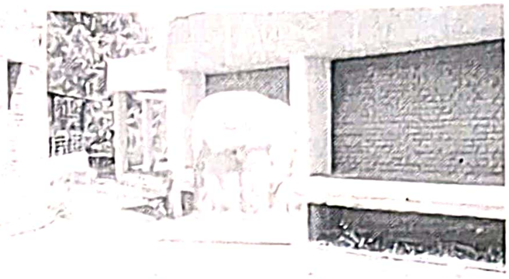

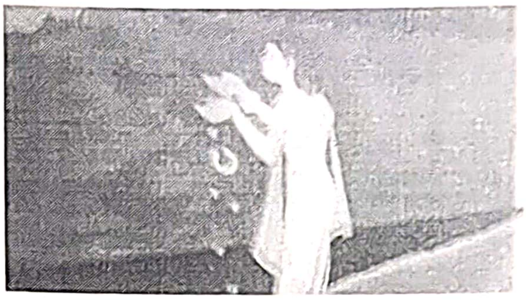

कालिदास संस्कृत अकादमी के आश्रमीय व्यवस्था में हमने देखा कि कालिदास की कृतियों में ज़िन वनस्पतियों, वृक्षों आदि का उल्लेख मिलता है, उन्हें आकर्षक ढंग से रोपा गया है। अकादमी के कक्षों के नाम कालिदास की कृतियों के नाम पर रखे गये है। महाकवि की कृतियों के विविध प्रसंगों को मूर्तिवत् अथवा चित्रवत् रुप में जगह–जगह प्रदर्शित किया गया है। ग्रंथालय, नाट्यशाला एवं अन्य कक्षों में सर्वत्र कालिदास अपनी कृति के माध्यम से देखे–समझे जा सकते हैं। नाट्यशाला के पास बन्दरों का परिवार इस प्रकार बैठा था, जैसे उन्ही के घर का आंगन हो। जब हमारे लिए मुख्य द्वार खोला गया तब वे पहले ही प्रवेश पाने की कोशिश करने लगे। कई औषधिय पौधे अकादमी के प्रांगण में अपने सघन रुप में विद्यमान हैं।

पुनरागमनायच

लगभग दो घंटे का अकादमी भ्रमण हमें अविस्मरणीय यादगार छोड़ गया है। खासकर उपनिदेशक डॉ. जगदीश शर्माजी के मिलनसार व्यवहार को हम कभी नहीं भूल पायेंगे। हम सभी उनके लिए अनजान थे। पर ऐसा लगा नहीं। काफी स्नेह, दुलार और विनम्र–शिष्ट व्यवहार के साथ आपने हमें परिसर का भ्रमण कराया तथा इस भ्रमण के लिए आभार पत्र भी दिया आपने। विदा के वक्त जब हमने हाथजोड़ कर प्रणाम किये और विद्यार्थी उनके चरण स्पर्श के लिए झुके तब उन्होने काफी विनम्रता के साथ कहा–पुनरागमनायच।

सांदीपनि मुनि आश्रम

संस्कृत कथा साहित्य के इतिहास में कृष्ण–सुदामा की मित्रता की कहानी बहुत ही रोचक ढंग से पढ़ने–सुनने को मिलती है। उज्जैन स्थित सांदीपनि मुनि आश्रम के बारे में कहा जाता है कि कृष्ण ओर सुदामा ने इसी आश्रम में अपनी

प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी। अतः इस आश्रम को देखना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। यहां हमने आश्रम को वैसा ही देखा जैसा पुस्तकों में प्रायः लिखा गया है। पेड़–पौधे और गाय–बछड़े आदि के साथ बगल में ही खेतीहर जमीन। आश्रम में चंदन का वृक्ष, जो तार के घेरे में था, फिर भी दर्शनार्थी उसकी खाल उखाड़ने से वाज नहीं आये थे।

सांदीपनि आश्रम का मुख्य द्वार

आश्रम में हमने गुरु–शिष्य परंपरा के विविध चित्र तो देखे ही, साथ ही वहां के गुरुजी की व्याख्यान शैली अपने को काफी अच्छी लगी। हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत में धारा प्रवाह बोलने वाले गुरुजी ने कृष्ण–सुदामा से जुड़े कई कथा प्रसंगों की व्याख्या अपने ढंग से की। हमने पसंद भी किया। कथा–प्रसंगों की वैज्ञानिक व्याख्या में किसी प्रकार का अंधविश्वास नहीं लगा। आपने बताया कि जब श्रीकृष्ण अध्ययन के लिए यहां आये तब महत्रृषि सांदीपनि से बोले कि गुरुवर! मैं जानता तो सब कुछ हूं, पर समझ नहीं पाता कि प्रारंभ कहां से करु? तब गुरुजी ने कहा कि शून्य से प्रारंभ करो। गुरुकुल की व्यवस्था ही यही बताने के लिए थी। सब कुछ जानने की भूल विद्यार्थी का लक्षण है और उसे शून्य का एहसास कराना गुरु की गुरुता है। गुरुकुल में शून्य से ही प्रारंभ किया जाता है। दुनिया गोल है। पता नहीं चलता कि इसका प्रारंभ कहां से है। किन्तु व्यक्ति जहां है, वही से प्रारंभ करके अपनी दुनिया रच सकता है।

भर्तृहरि गुफा

भर्तृहरि गुफा उज्जैन का वह दर्शनीय स्थान है, जहा के बारे मे कहा जाता है कि राजा भरथरी ने विरागी होने के बाद अपना शेष जीवन यहीं तपस्या करते हुए बिताये थे। राजा भर्तृहरि के बारे में लोकप्रचलित कथा है कि एक बार उनके कार्यव्यवहार से प्रसन्न होकर किसी सिद्ध संत ने उन्हें आजीवन यौवन भोग का वरदान दिया था। इसके लिए उसने उन्हें एक दुर्लभ फल देते हुए कहा था कि जब वे खा लेंगे तो वे आजीवन युवा बने रहेंगे। राजा ने सोचा कि जब राजकाज से वक्त मिले तब रानी के साथ

इसका भोग किया जाए। ताकि दोनो आजीवन युवा रहेंगे। फिर उस फल का रहस्य बतलाते
हुए आपने उस फल को रानी को सौंप दिये। कहा जाता है कि रानी को जब यह बात मालूम
हुई तब उसने अपने प्रिय अंगरक्षक को वह फल सौंप दिया। इतना ही नहीं जब अंगरक्षक को
उस फल का रहस्य मालूम हुआ तब उसने उसे उस गणिका को सौंपना उचित समझा जिससे
वह अमर प्रेम करता था। पर संयोग ऐसा बना कि उस गणिका ने सोचा कि इस अमर फल
का असली हकदार तो अपना प्रिय राजा भर्तृहरि ही है। अतः उसने उस अमर फल को राजा
को ही सौंप दिया।

जब राजा को अपना ही फल गणिका द्वारा हाथ लगा तब उसे इस प्रेमावली
दुनिया का रहस्य मालूम हुआ। इतना ही नहीं उसने प्रेम की इस नियति के बारे में लिखा कि
ऐसे प्रेम और प्रेमी को धिक्कार है, जो नहीं जानते कि वे जिससे प्रेम करते है, वह किसी और
से प्रेम कर रहा/रही है।

इसी कथा प्रसंग से जुड़ा यह गुफा अपना अतीत बांच रहा है। जिसे गुफा
कहा जाता है, वह कोई पहाड़ी स्थल नही है। वह है कोई पुराना महल ही। सुरंगनुमा और
संकीर्ण रास्ते से होकर बड़े–छोटे कमरे तक पहुंचना काफी रहस्यमय लगता है। किन्तु बात
वहां विश्वसनीय हो जाती है कि ऐसे महल तो पहले बनते ही थे। उनके उपयोग भी तब ऐसे
ही कार्यों के लिए होते थे। शायद इन्हें ही कोपभवन कहा जाता होगा। राजा को जब राजकाज
से वैराग्य हो गया होगा तब इस महल में रहना प्रारंभ कर दिया होगा।

भर्तृहरि गुफा का बाहरी दृश्य

जंतर मंतर अर्थात् ज्योतिष शाला

जीवाजी वेधशाला के नाम से जाना जानेवाला उज्जैन का यह स्थान एक ज्योतिष अध्ययन का वैज्ञानिक केन्द्र है। इसकी स्थापना जयपुर के महाराज सवाई राजा जयसिंह ने सन् 1719 में किया था। कहा जाता है कि राजा जयसिंह शूर सेनानी होने के साथ ही राजनीतिज्ञ और विशेष रुप से विद्वान थे। आपने पार्शियन और अरबी भाषा में लिखित ज्योतिष और गणित ग्रंथों का भी अनुशीलन किया था। साथ ही आपने ज्योतिष ग्रंथों की भी

रचना की थी।

इस वेधशाला द्वारा सन् 1942 से प्रतिवर्ष दृश्य ग्रहस्थिति पंचांग का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पंचांग खगोलविदों तथा पंचांग निर्माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। इस शाला में अलग–अलग विभाग हैं, जहां से ज्योतिष संबंधी वैज्ञानिक जानकारी देने के लिए वहां शासकीय गाईड नियुक्त हैं। इस गाईड ने हमें शाला के विविध भाग जैसे–सम्राट यंत्र, नाड़ी वलय यंत्र, भित्ति यंत्र, दिगंश यंत्र, शंकु यंत्र तथा तारा मंडल के बारे में जानकारी दी।

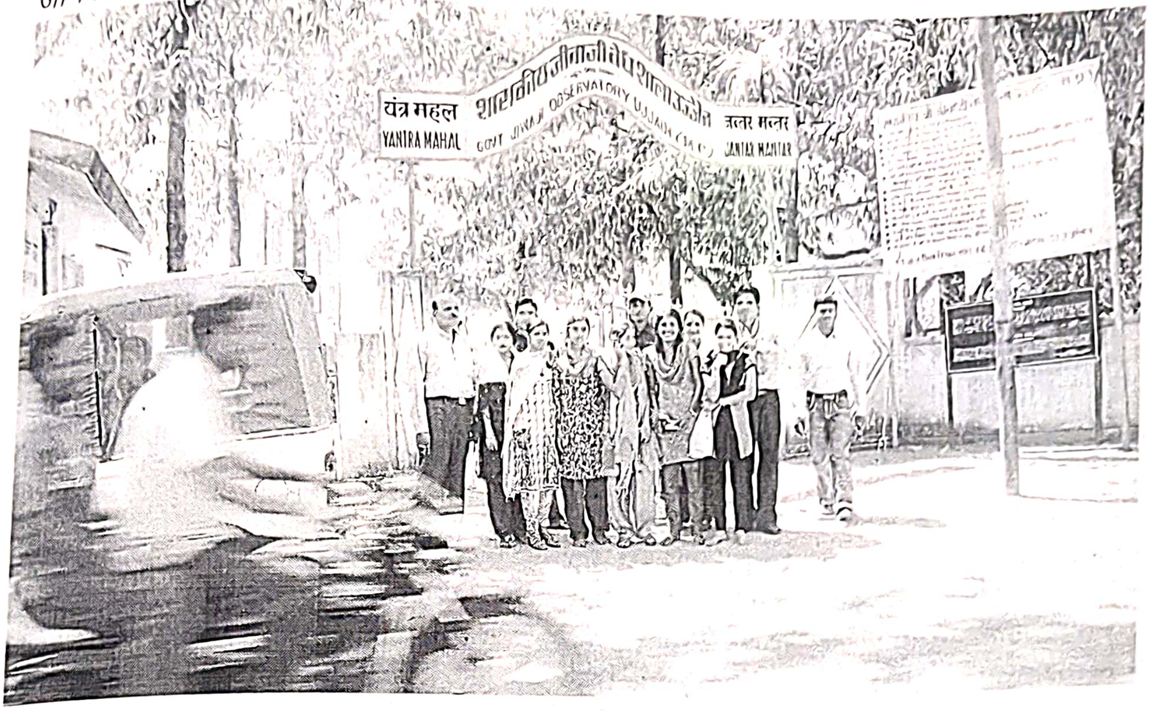

शासकीय जीवाजी वेधशाला का प्रवेश द्वार

7.

श्रीमहाकालेश्वर वैदिक प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान

महाकालेश्वर मंदिर द्वारा संचालित महाकाल धर्मशाला के बगल में उसी परिसर में वैदिक प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान है। यहां सम्वेत स्वर में छोटे बच्चों को वैदिक मंत्रों का प्रशिक्षण दिया जात है। हमने जब वेदपाठ सुना तब वहां अंदर जाकर देखने की हमारी जिज्ञासा बढ़ गई। इस केद्र में आश्रम व्यवस्था है। बच्चे आश्रम में रहते हैं, और जमीन पर बैठकर गुरुजी के साथ वैदिक मंत्रों का पाठ करते है। इस आश्रम के गुरुजी ने हमें बताया कि वहां हिन्दी, अंग्रेजी, गणित आदि के साथ एकेडमिक शिक्षा की भी व्यवस्था है।

वापसी और खुशी के रंग

चूंकि 20 मार्च 2011 को होली थी, सो तीन दिन पहले महाकाल की आध्यात्मिक नगरी मे महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं के साथ भ्रमण करना हम सबके लिए उत्साही ही था। अधिकांश विद्यार्थी पहली बार इतनी लंबी यात्रा किये थे। कुछ के लिए तो ट्रेन की यह पहली यात्रा ही थी। सबने पहली बार बाहर में अपने को नये परिवेश में समायोजित करना सीखा।

आगमन के बाद होली की उमंग

19 मार्च 2011 को जिस दिन नगर में होलिका दहन की तैयारी चल रही थी, राजनांदगांव स्टेशन पर उतरने के बाद हमारे विद्यार्थी आपस में रंग–गुलाल खेलने से स्वयं को नहीं रोक पाये।

विभागीय मूल्यांकन और अध्ययन निष्कर्ष

अध्ययन यात्रा से लौटने के बाद विद्यार्थियों से प्रतिकिया जानने के लिए विभाग द्वारा तैयार किये गये एक प्रश्नावली के जवाब से पता चला कि यह यात्रा विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच पैदा करने में कारगर सिद्ध हुई है। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे जो पहली बार अपने घरेलू परिवेश से बाहर निकले थे, उनमें काफी आत्मविश्वास विकसित हुआ है। नये परिवेश में स्वयं को ढालना और उसके अनुसार सकारात्मक और सृजनात्कम कार्य करना युवा वर्ग के लिए अनिवार्य अध्ययन माना जाना चाहिए।

छात्राओं के लिए यह यात्रा इस अर्थ में महत्वपूर्ण रही है कि अधिकांश ने पहली बार ट्रेन की यात्रा की थी। किन्तु समूह में उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होने से उनकी बहुत सारी शंकाएं स्वतः दूर तो हुईं हीं, नई जगह की रीति और संस्कृति भी उन्हें देखने समझने को मिलीं।

यह यात्रा विशेषकर कालिदास संस्कृत अकादमी को ध्यान में रख कर आयोजित थी। अतः विद्यार्थियों में अकादमी की रचनात्मक और सृजनात्मक गतिविधियों के बारे में जानने की विशेष ललक थी। इस प्रसंग में उल्लेखनीय बात यह रही कि अधिकांश विद्यार्थी अकादमी की स्थापना और उसके उद्देश्य के बारे में तरह–तरह के सवालों के जवाब हासिल करने में सफल हुए। अकादमी की शोध पत्रिका 'दुर्वा' के बारे में अपने विभाग के कम ही लोगों को जानकारी थी। उसके लिए शोधपत्र लिखने की योजना बनाना तथा उसे नियमित पढ़ने के लिए विभाग में मंगाने की उनकी इच्छा से विभाग को काफी संतोष मिला है।

'शतकत्रयी' के रचयिता भर्तृहरि के जीवन–दर्शन से जुड़ी कथात्मक घटनाओं के बारे में ऐतिहासिक साक्ष्य देखने–परखने से उन्हे बहुत रोचक जानकारी हासिल हुई है। एक राजसी रचनाकार का एकाएक वैरागी हो जाना किसी भी विद्यार्थी के लिए कौतुहल का विषय लग रहा था। किन्तु भर्तृहरि गुफा का वर्त्तमान स्वरुप देखने से उनके बारे

में बहुत–सी काल्पनिक धारणाएं दूर हुई हैं।

सांदीपनि आश्रम का भ्रमण ऋषि संस्कृति के बारे में जानकारी देने में सफल सिद्ध हुआ है। गुरुकुल परंपरा की प्राचीन अध्ययन–अध्ययापन पद्धति से अवगत होना हमारे विद्यार्थियों के लिए काफी रोचक और सोचक रहा है। जीवन में व्यावहारिक ज्ञान की महत्ता पर आधारित हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति आज भी प्रासंगिक है, ऐसा हमारे विद्यार्थी महसूस कर रहे हैं। किन्तु इस यात्रा में सबसे रोचक प्रसंग विद्यार्थियों के लिए वैदिक प्रशिक्षण शोध में वेदाध्ययन और वहां का सामूहिक मंत्रोच्चार रहा। हमारे विद्यार्थी उसी तरह से अध्ययन–अध्ययापन के प्रति अपनी रुचि व्यक्त कर रहे हैं।

समग्रतः यह कहना है कि संस्कृत विभाग के लिए इस पहली अध्ययन यात्रा को लेकर विद्यार्थियों में काफी उत्सुकता और उत्साह का माहौल था। विभागीय स्तर पर प्रयास किया गया कि विद्यार्थियों की मनसानुसार अध्ययन–यात्रा कराकर उनकी जिज्ञाएं पूरी की जाएं। जहां तक हमारा ख्याल है कि हम अपनी यात्रा में सफल हुए हैं। साथ ही छात्र–छात्राओं को नये परिवेश में ढालने तथा देश–दुनिया के शैक्षणिक माहौल से अवगत कराने के लिए भविष्य में इस तरह की योजनाएं बनाना हमेशा उचित रहेगा।

(प्रस्तुति–डॉ. शंकर मुनि राय)
प्रभारी
संस्कृत विभाग
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव छ. ग.

कार्यालय : प्राचार्य, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव छ. ग.

प्रेस विज्ञप्ति

संस्कृत संवेदना और संस्कार की भाषा है—डॉ. शुक्ला

(दिग्विजय महाविद्यालय में अतिथि व्याख्यान)

संस्कृत संवेदना और संस्कार की भाषा है। यह व्यक्ति को जीने के तरीके सीखाती है। इसलिए जरुरी है कि इसके अध्ययन और अध्यापन में रुचि पैदा करने के लिए नई तकनीकि विकसित की जाए। जो संस्कृत को जटिल भाषा बताते हैं, वे इसकी प्रकृति से अवगत नहीं हैं। सरलता का अर्थ अशुद्धता नहीं है।

ये उद्‌गार हैं इलाहाबाद से पधारे संस्कृत के विद्वान डॉ. रमाकांत शुक्ल के, जो यहां दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में सीपीई के तहत आयोजित अतिथि व्याख्यान के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रुप में बोल रहे थे। उन्होंने विभागीय विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आगे कहा कि यद्यपि इस भाषा में तकनीकि शिक्षा की व्यवस्था नहीं हुई है, तथापि इसके अध्ययन से समाज मे लोक कल्याण के बीज विकसित होते हैं। क्योंकि संस्कृत का साहित्य लोकमंगल की भावना पर आधारित है।

कालिदास, भवभूति तथा बाणभट्‌ट के नाटकों के विविध प्रसंगों को मानवीय संवेदना से जोड़कर उन्होनें संस्कृत विषय की प्रयोजनीयता साबित कर विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर दिया। साथ ही अतिथि विद्वान ने संस्कृत के रोजगारपरक क्षेत्रों का भी उल्लेख किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विभाग के प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने कार्यक्रम के उद्‌देश्य पर प्रकाश डाला तथा प्रो. थानसिंह वर्मा ने सीपीई के तहत महाविद्यालय के शैक्षणिक उन्नयन से संबंधित योजनाओं का उल्लेख किया। विभाग के छात्र—छात्राओं ने अतिथि का स्वागत समवेत स्वस्ति वाचन से किया। डॉ. आर. एस. साहू ने विभाग की ओर से आभार प्रकट किये तथा कुमारी सीता तिवारी और कुलेश्वर साहू ने शांतिपाठ के साथ समारोह का विसर्जन किया।

अभिभावक सम्मेलन

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में आयोजित अभिभावक सम्मेलन में अभिभावकों ने सुझाव दिये कि महाविद्यालय में समय सारिणि ऐसी होनी चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों से आनेवाले विद्यार्थी परेशान न हों। उनका कहना था कि लगातार कक्षाएं नहीं होने से विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार क्लास करने के बाद घर की ओर प्रस्थान कर जाते है। खासकर ग्रामीण छात्राएं सांध्यकालीन कक्षाओं का लाभ नहीं ले पाती है।

प्रभारी प्राध्यापक डॉ. शंकर मुनि राय ने कहा कि महाविद्यालय का टाइम—टेबल पूरे कॉलेज को ध्यान में रखकर बनाया जाता है, किसी एक विषय को ध्यान रखकर नहीं। इससे पहले उन्होने संस्कृत के परीक्षा परिणाम का उल्लेख करते हुए कहा कि गर्व की बात है कि यहां प्रदेश के किसी भी महाविद्यालय से अधिक संस्कृत के विद्यार्थी अध्ययनरत है।

सेकेण्ड सेमेस्टर की परीक्षा में शत प्रतिशत रिजल्ट आने पर अभिभावकों ने महाविद्यालय प्रशासन की सराहना की तथा इस गरिमा को कायम रखने की अपील भी की। किन्तु संस्कृत साहित्य परिषद की अध्यक्ष कुमारी सुशीला केंवट ने कहा कि यद्यपि परीक्षा परिणाम शतप्रतिशत रहा है, पर प्राप्त अंक से हमलोग संतुष्ट नहीं हैं। डॉ. आलोक मिश्रा ने अभिभावकों के सुझाव के प्रति आभार व्यक्त किये तथा अपील की कि वे अपने बच्चो के लिए समय निकालें तथा समय—समय पर अपने विचार से महाविद्यालय प्रशासन को अवगत कराते रहें।

Principal
Govt. Digvijay College
RAJNANDGAON (C.G.)